

संप्रेषण की नई प्रवृत्तियां : इमोजी, मीम और ट्रेडिंग शब्दावली का अध्ययन और विश्लेषण

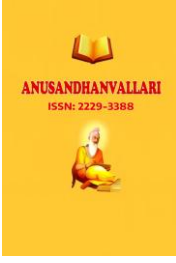
प्रो. (डॉ.) नीलम राठी

प्रोफेसर एवं प्रभारी, हिन्दी विभाग, अदिति महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली - 110039

Email: nrathi@aditi.du.ac.in

शोध सार :

यह शोध आधुनिक डिजिटल युग में 'संप्रेषण की बदलती प्रवृत्तियों' को समझने का प्रयास है। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि 'इमोजी', 'मीम' और 'ट्रेडिंग शब्दावली' ने संवाद के स्वरूप को एक नया आयाम प्रदान किया है। अब व्यक्ति अपने विचारों और भावनाओं को शब्दों की अपेक्षा प्रतीकों और दृश्य माध्यमों से अधिक सहजता से व्यक्त करता है। "सोशल मीडिया" और "चैटिंग प्लेटफॉर्म" ने संचार को तेज़, सरल और आकर्षक बनाया है। इसके बावजूद, भावनात्मक गहराई में कुछ कमी भी देखी गई है। 'इमोजी' ने भावों की तत्काल अभिव्यक्ति का माध्यम दिया है, जबकि 'मीम' समाज की आलोचना, व्याख्या और हास्य के प्रभावी उपकरण बन गए हैं। 'ट्रेडिंग शब्दों' ने भाषा में आर्थिक दृष्टि और व्यावहारिक सोच का समावेश किया है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ है कि इन तीनों माध्यमों ने मिलकर संवाद को वैश्विक, रचनात्मक और सहभागी बनाया है। वहीं दूसरी ओर, इस प्रक्रिया में आत्मीयता और मानवीय संवेदना को बनाए रखना आवश्यक है। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि तकनीकी संप्रेषण ने भाषा, समाज और संस्कृति के बीच एक नई साझेदारी स्थापित की है, जो मनुष्य को सोचने, जुड़ने और अभिव्यक्त होने का एक नवीन मार्ग प्रदान करती है।

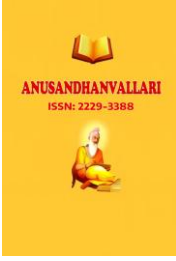


मुख्य शब्द : डिजिटल संप्रेषण, इमोजी, मीम, प्रतीक, ट्रेडिंग शब्दावली, चैटिंग प्लेटफॉर्म, दृश्य अभिव्यक्ति, प्रवृत्तियाँ, प्रतीकात्मक भाषा, संचार माध्यम

प्रस्तावना :

‘संप्रेषण’ मानव सभ्यता का मूल आधार रहा है। डिजिटल तकनीक के आगमन ने इसे नया रूप और दिशा दी है। अब संवाद केवल वाचिक या लिखित होने की बजाय ‘प्रतीकात्मक’ और ‘दृश्य माध्यम’ के सहारे भी होता है। “सोशल मीडिया”, “चैटिंग प्लेटफॉर्म” और “ऑनलाइन नेटवर्क” ने संवाद को सीमाओं से परे विस्तृत कर दिया है (अनिरुद्ध कुमार सुधांशु 2021, पृष्ठ संख्या – 54)। व्यक्ति आज अपनी भावनाओं को शब्दों के स्थान पर ‘इमोजी’, ‘मीम’ और ‘संकेतों’ के माध्यम से व्यक्त करता है। यह परिवर्तन भाषा की संरचना, सामाजिक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति पर गहरा प्रभाव डाल रहा है (गुलाब कोठारी 2022, पृष्ठ संख्या – 67)। इस शोध का उद्देश्य इन तकनीकी परिवर्तनों के सामाजिक और भाषिक प्रभावों का अध्ययन करना है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि आधुनिक संप्रेषण ने मानवीय अनुभवों और अभिव्यक्ति की प्रकृति को किस प्रकार रूपांतरित किया है।

डिजिटल युग के इस संवादात्मक विस्तार ने ‘संप्रेषण’ को अधिक गतिशील और बहुआयामी बना दिया है। अब संवाद केवल विचारों की गहराई तक सीमित होने की बजाय ‘प्रतीकों’ और ‘दृश्य’ संकेतों से संचालित होने लगा है। “इमोजी” भावनाओं की त्वरित अभिव्यक्ति का माध्यम बन गए हैं, जबकि “मीम” सामाजिक व्याख्या के प्रभावी प्रतीक के रूप में उभरे हैं। “ट्रेडिंग शब्दावली” ने भाषा को आर्थिक यथार्थ से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ दिया है (विजेन्द्र कुमार 2022, पृष्ठ संख्या – 46)। इस परिवर्तन ने व्यक्ति को वैश्विक संवाद का सक्रिय भागीदार बनाया है, परंतु इसके साथ ही भावनात्मक संतुलन की नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। यह शोध-पत्र इसी परिवर्तनशील प्रवृत्ति का विश्लेषण करता है कि किस प्रकार डिजिटल माध्यमों ने ‘भाषा’, ‘समाज’ और ‘संस्कृति’ के



संबंधों को पुनर्परिभाषित करते हुए भविष्य के संप्रेषण का नया स्वरूप निर्मित किया है (गुलाब कोठारी 2022, पृष्ठ संख्या – 74)।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा का उद्देश्य उन प्रमुख स्रोतों का आलोचनात्मक अध्ययन करना है, जिनसे यह समझा जा सके कि विभिन्न विद्वानों ने “संप्रेषण की नई प्रवृत्तियों” – विशेषतः ‘इमोजी’, ‘मीम’ और ‘ट्रेडिंग शब्दावली’ – को ‘सामाजिक’, ‘सांस्कृतिक’ और ‘भाषिक दृष्टि’ से किस प्रकार परिभाषित किया है। इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग में संप्रेषण मानवीय भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति का नया माध्यम बन गया है (अनिरुद्ध कुमार सुधांशु 2021, पृष्ठ संख्या – 68)। आधुनिक लेखन और शोध यह दर्शाते हैं कि ‘प्रतीकात्मक भाषा’, ‘दृश्य संकेत’ और ‘त्वरित संवाद’ ने व्यक्ति की पहचान और अभिव्यक्ति को नया स्वरूप दिया है। इन अध्ययनों से यह भी ज्ञात होता है कि आधुनिक संप्रेषण ने संवाद को सरल बनाया है। लेकिन भाषा की संवेदनशीलता और सामाजिक सौहार्द पर इसके प्रभाव भी गहरे हैं। इसीलिए यह शोध-पत्र अपने विषय को ‘वैचारिक स्पष्टता’, ‘सामाजिक प्रासंगिकता’ और ‘विश्लेषणात्मक दृष्टि’ प्रदान करता है। जिससे आगे का अध्ययन अधिक गहन और संगठित रूप में विकसित हो सके –

- “मीडिया में अनुवाद का संप्रेषण धर्मी नवीन मॉडल”, मंजु मुकुल (2023) की पुस्तक –

पुस्तक में यह प्रतिपादित किया गया है कि आधुनिक मीडिया में भाषा केवल सूचना के आदान-प्रदान का साधन न होकर वह “अनुभवों और भावनाओं के पुनर्सृजन का सशक्त माध्यम” बन गई है। लेखिका के अनुसार –

“हर अनुवाद अपने भीतर संवाद का एक नया संदर्भ रचता है,

जहाँ शब्द नहीं, अर्थ बोलते हैं।”

(मंजु मुकुल (2023), पृष्ठ संख्या – 96)

यह विचार इंगित करता है कि तकनीकी माध्यमों ने अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को अत्यंत 'बहुआयामी' बना दिया है। वर्तमान डिजिटल परिदृश्य में संप्रेषण केवल शब्दों तक सीमित होने की बजाय 'प्रतीकों', 'संकेतों' और 'साझा सांस्कृतिक अर्थों' के माध्यम से भी अभिव्यक्त होता है। यह चिंतन आधुनिक संवाद में उत्पन्न उस 'सांस्कृतिक परिवर्तन' को स्पष्ट करता है, जहाँ भाव, छवि और संकेत मिलकर एक "नवीन भाषिक संस्कृति" का निर्माण कर रहे हैं।

- "सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी", किशन रेगार (2023) द्वारा लिखित लेख –

लेख में आधुनिक संचार माध्यमों के विकास तथा उनके समाज पर प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। लेखक के अनुसार, तकनीक ने सूचना के प्रसार की गति को अत्यंत 'तीव्र' बनाया है और 'संवाद की प्रकृति' में मूलभूत परिवर्तन लाया है। 'इमोजी', 'मीम' और 'ट्रेडिंग शब्दावली' – जैसी नई प्रवृत्तियाँ यह दर्शाती हैं कि डिजिटल तकनीक ने भाषा को एक नवीन रूप प्रदान किया है। अब संप्रेषण 'दृश्य प्रतीकों', 'संक्षिप्त अभिव्यक्तियों' और 'तकनीकी शब्दों' पर आधारित हो गया है, जिससे विचार अधिक त्वरित और प्रभावी ढंग से संप्रेषित होते हैं। इस प्रकार, रेगार का लेख "संप्रेषण की नई प्रवृत्तियाँ : इमोजी, मीम और ट्रेडिंग शब्दावली का अध्ययन और विश्लेषण" – के लिए एक सशक्त आधार प्रस्तुत करता है। क्योंकि यह तकनीकी विकास और भाषा परिवर्तन के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट रूप से उद्घाटित करता है।

- "डिजिटल संचार तकनीक की संभावनाएं और पत्रकारीय चुनौतियाँ", प्रियांका रंजन और उत्तम कुमार पेगू (2023, सितंबर 30) द्वारा लिखित शोध-पत्र –

इसमें यह प्रतिपादित किया गया है कि डिजिटल माध्यमों ने संवाद की पारंपरिक सीमाओं को तोड़कर समाज को एक 'साझा मंच' प्रदान किया है। लेख में यह विचार प्रमुख रूप से उभरता है कि तकनीक ने सूचना के प्रवाह को सहज बनाया है, परंतु इसके साथ अभिव्यक्ति से जुड़ी अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। लेखकद्वय लिखते भी हैं कि –

"डिजिटल मंचों ने संवाद को लोक के बीच पहुँचाया है,

पर उसके सत्य और भाव को बनाए रखना

सबसे कठिन कार्य बन गया है।”

(प्रियांका रंजन और उत्तम कुमार पेगू (2023, सितंबर 30), पृष्ठ संख्या – 06)

यह कथन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि समकालीन संचार केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं रहा। क्योंकि वह ‘भावों’, ‘प्रतीकों’ और ‘सामूहिक संवेदनाओं’ के संतुलन का माध्यम बन गया है। यह दृष्टिकोण उस परिवर्तनशील युग की ओर संकेत करता है, जहाँ ‘भाषा’, ‘छवि’ और ‘अनुभव’ मिलकर अर्थ की नई परतों का सृजन कर रहे हैं।

- “संप्रेषण प्रक्रिया तथा जन संचार”, विजेन्द्र कुमार (2022) द्वारा लिखित यह पुस्तक –

यह ग्रंथ संप्रेषण के सैद्धांतिक ढाँचे और उसके सामाजिक प्रभावों की गहराई से व्याख्या करता है। लेखक के अनुसार –

“भाषा वह सेतु है जो विचारों को भावनाओं से जोड़ती है,

और यही संबंध समाज में संवाद को जीवित रखता है।”

(विजेन्द्र कुमार 2022, पृष्ठ संख्या – 98)

यह विचार आज के डिजिटल युग में भी “प्रासंगिक” है। जहाँ ‘इमोजी’ और ‘मीम’ ने इस सेतु का नया रूप ले लिया है। पुस्तक में स्पष्ट किया गया है कि जन संचार केवल सूचना का माध्यम ही नहीं साथ में, “सामाजिक बोध” और “सामूहिक चेतना” के निर्माण की प्रक्रिया है। विजेन्द्र कुमार का विश्लेषण यह दर्शाता है कि आधुनिक संप्रेषण माध्यमों में भाव-संप्रेषण के नए प्रतीक उभरे हैं। इन प्रतीकों ने संवाद की गति तो बढ़ाई है, पर उसकी आत्मीयता को चुनौती भी दी है। यह अध्ययन इस शोध के लिए उपयोगी है। क्योंकि यह पारंपरिक संप्रेषण सिद्धांतों को डिजिटल युग की नई प्रवृत्तियों से जोड़ने का ‘सशक्त सैद्धांतिक आधार’ प्रदान करता है।

- “संप्रेषण की समग्रता”, गुलाब कोठारी (2022) द्वारा लिखित यह पुस्तक –

यह पुस्तक संप्रेषण को केवल सूचना के आदान-प्रदान के रूप में प्रस्तुत करने की बजाय एक 'जीवंत मानवीय प्रक्रिया' के रूप में प्रस्तुत करती है। उदाहरण के लिए, लेखक कहता है कि —

“संवाद मनुष्य के अस्तित्व का वह आयाम है,
जो विचार, भावना और संस्कार को एक सूत्र में जोड़ता है।”

(गुलाब कोठारी 2022, पृष्ठ संख्या – 67)

इस कथन से स्पष्ट होता है कि संप्रेषण केवल शब्दों का प्रयोग न होकर 'आत्मिक जुड़ाव' का माध्यम भी है। कोठारी ने अपने ग्रंथ में बताया है कि आधुनिक युग में तकनीकी भाषा ने संवाद को गति दी है, पर उसके भीतर संवेदना का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। यह दृष्टि इस शोध के लिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह इंगित करती है कि 'इमोजी', 'मीम' और 'डिजिटल प्रतीकात्मकता के युग' में भी संप्रेषण की आत्मा तभी जीवित रह सकती है जब वह 'भावनात्मक' और 'सांस्कृतिक संतुलन' को संरक्षित रखे।

- “डिजिटल दुष्प्रचार और संचार में मानवीय आवाज़ की भूमिका”, रीता सिंह (2020, सितंबर 18) द्वारा लिखित आलेख —

आलेख में यह प्रतिपादित किया गया है कि डिजिटल माध्यमों की तीव्र गति ने सूचना को 'लोकतांत्रिक' तो बनाया है, परंतु इसके साथ संवाद में 'मानवीय संवेदना का संतुलन' धीरे-धीरे क्षीण होने लगा है। लेखिका का मत है कि तकनीकी प्लेटफॉर्म पर प्रसारित सूचनाएँ जब भावनात्मक स्वर या मानवीय जुड़ाव से रहित होती हैं, तब वे 'दुष्प्रचार का रूप' धारण कर लेती हैं। इसीलिए वह लिखती हैं कि —

“संचार की विश्वसनीयता वहाँ घटती है,
जहाँ शब्दों के पीछे इंसानी अनुभव का स्वर नहीं होता।”

(रीता सिंह (2020, सितंबर 18), पैराग्राफ – 22-23)

यह विचार डिजिटल युग के उस गहन विरोधाभास को उजागर करता है, जहाँ संवाद के नए प्रतीक और माध्यम तो निर्मित हुए, पर उनमें संवेदना को बनाए रखना सबसे कठिन कार्य बन गया है। यह चिंतन आधुनिक संप्रेषण की उस जटिलता को समझने में सहायक है, जहाँ मनुष्य और तकनीक के मध्य का 'भावनात्मक संतुलन' निरंतर पुनर्परिभाषित हो रहा है।

- "हिन्दी और मीडिया: बदलती प्रवृत्ति", रवींद्र जाधव और केशव मोरे (2016) द्वारा लिखित पुस्तक –

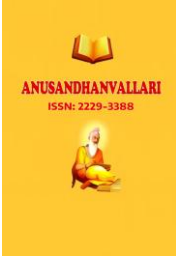
इस किताब में यह प्रतिपादित किया गया है कि 'मीडिया' ने हिन्दी भाषा को अभिव्यक्ति का एक 'नया जीवन-क्षेत्र' प्रदान किया है, जहाँ शब्दों के अर्थ अब 'सामाजिक', 'सांस्कृतिक' और 'तकनीकी प्रभावों' से निरंतर परिवर्तित हो रहे हैं। लेखकों के अनुसार, मीडिया ने भाषा को उसकी पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकालकर बहुआयामी स्वरूप दिया है। इस संदर्भ में वे लिखते भी हैं कि –

**“मीडिया ने भाषा को जनता के बीच पुनः जीवित किया है,
पर उसके भीतर नए प्रतीकों और रूपकों की दुनिया भी रची है।”**
(रवींद्र जाधव और केशव मोरे (2016), पृष्ठ संख्या – 63)

यह विचार स्पष्ट करता है कि आधुनिक संचार में भाषा केवल वाणी नहीं रही। क्योंकि वह एक 'दृश्य' और 'भावनात्मक अनुभव' में परिवर्तित हो गई है। इस प्रकार, यह कृति आधुनिक संवाद की उस प्रक्रिया को समझने में सहायक है, जहाँ अभिव्यक्ति निरंतर रूपांतरित होती हुई नई सामाजिक संवेदनाओं के साथ विकसित हो रही है।

डिजिटल युग में संप्रेषण की बदलती प्रवृत्तियाँ

डिजिटल युग ने “संवाद की प्रकृति” को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है और उसे एक नवीन स्वरूप प्रदान किया है। आज संप्रेषण केवल शब्दों तक सीमित नहीं रहा है। क्योंकि इसमें 'दृश्य संकेत', 'प्रतीक' और 'तकनीकी अभिव्यक्तियाँ' भी सम्मिलित हो गई हैं। 'सोशल मीडिया',



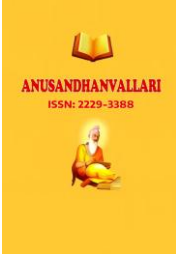
‘चैट प्लेटफॉर्म’ और ‘मल्टीमीडिया’ माध्यमों ने भाषा को अधिक संक्षिप्त तथा त्वरित बना दिया है (विजेन्द्र कुमार 2022, पृष्ठ संख्या – 123)। इस परिवर्तन ने न केवल अभिव्यक्ति की गति बढ़ाई है, साथ में विचारों के प्रस्तुतीकरण में भी नए आयाम जोड़े हैं। आधुनिक तकनीक ने संवाद की पहुँच को सीमाओं से परे विस्तृत किया है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति अब एक “सक्रिय संप्रेषक” के रूप में उभर रहा है। परिणामस्वरूप, संप्रेषण अब ‘मानवीय संबंधों’ और ‘भावनाओं के संतुलन’ का मूलाधार बन गया है (मंजु मुकुल 2017, पृष्ठ संख्या – 92)। जैसा कि “संप्रेषण कला” नामक किताब में एक जगह कहा गया है कि –

“संप्रेषण वह जीवित प्रक्रिया है,
जो विचार को भावना से जोड़ती है
और समाज में एकता का आधार बनाती है।”

(अनिरुद्ध कुमार सुधांशु (2021), पृष्ठ संख्या – 96)

इस तीव्र और खुले संवाद युग में भाषा की संवेदनशीलता तथा उसके सामाजिक प्रभाव की दिशा निरंतर परिवर्तित हो रही है। पहले संवाद का उद्देश्य विचारों की गहराई और सूक्ष्मता को अभिव्यक्त करना था। अब यह अभिव्यक्ति ‘प्रतीकात्मकता’ और ‘त्वरित प्रतिक्रिया’ के माध्यम में रूपांतरित हो गई है। ‘इमोजी’, ‘मीम’ और ‘दृश्य प्रतीकों’ ने संप्रेषण को अधिक सरल और आकर्षक बनाया है (विजेन्द्र कुमार 2022, पृष्ठ संख्या – 145)। साथ ही, उन्होंने भावनाओं की गहराई और सूक्ष्मता को कुछ हद तक सीमित भी कर दिया है। अब एक ही प्रतीक अनेक अर्थों में प्रयुक्त होने लगा है। जिससे संवाद का आशय संदर्भ पर निर्भर हो गया है। यह प्रवृत्ति ‘भाषा की स्थिरता’ को चुनौती देती है और उसे प्रयोगधर्मी दिशा प्रदान करती है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति अब भाषा को अभिव्यक्ति का साधन मानने के साथ-साथ प्रयोग और व्याख्या का क्षेत्र मानने लगा है (रवीन्द्र जाधव 2016, पृष्ठ संख्या – 67)। इस संदर्भ में रवीन्द्र जाधव का यह कथन उल्लेखनीय है –

“मीडिया ने भाषा को सूचना से आगे बढ़ाकर समाज के व्यवहार
और दृष्टिकोण का प्रतिबिंब बना दिया है।”

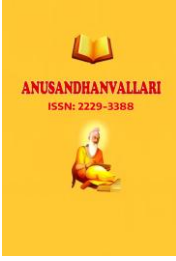


(रवीन्द्र जाधव, (2016), पृष्ठ संख्या – 83)

नई तकनीक के प्रभाव से संप्रेषण अब केवल संवाद का माध्यम नहीं रहा। क्योंकि वह “पहचान” और “संस्कृति” के पुनर्निर्माण का एक सशक्त “उपकरण” बन गया है। व्यक्ति सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी उपस्थिति स्थापित करता है और अपने विचारों द्वारा सामाजिक प्रवृत्तियों को दिशा प्रदान करता है (शैलेश शुक्ला 2024, पैराग्राफ – 11)। “डिजिटल संप्रेषण” यह दर्शाता है कि संवाद की उसकी भावात्मक अभिव्यक्ति में निहित है। इस तकनीकी युग ने विचारों की सीमाओं को विस्तृत किया है और संवेदनाओं को दृश्य रूप में प्रस्तुत करने का अवसर दिया है (सरिता जोशी, 2024 स्लाइड – 13)। परिणामस्वरूप, संवाद अब व्यक्तिगत अनुभव से आगे बढ़कर “सामूहिक चेतना का माध्यम” बन गया है। यह प्रवृत्ति आगे के अवलोकन में और स्पष्ट होगी, जहाँ ‘इमोजी’ और ‘मीम’ के माध्यम से भाव-प्रेषण की नवीन संरचना का विश्लेषण किया जाएगा।

इमोजी और मीम के माध्यम से भाव-प्रेषण

‘डिजिटल युग’ में संवाद का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हुआ है। इस परिवर्तन में ‘इमोजी’ भावनाओं के त्वरित संप्रेषण का प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। जो भाव पूर्व में केवल शब्दों के माध्यम से व्यक्त किए जाते थे, वे अब इमोजी के रूप में सहजता से प्रकट हो रहे हैं। “मुसकुराते चेहरे”, “टूटे दिल” या “हँसी के प्रतीक” – अब भावनाओं की नई भाषा का निर्माण कर रहे हैं (सीमा सिंह 2023, पृष्ठ संख्या – 284)। व्यक्ति अपने मनोभाव के अनुसार इन प्रतीकों का चयन करता है। जिससे संवाद अधिक ‘स्वाभाविक’ और ‘आकर्षक’ बन जाता है। इस ‘दृश्य भाषा’ ने लिखित संप्रेषण में नयापन लाया है और उसे भावनात्मक रूप से समृद्ध किया है। तकनीक और संवेदना के इस संगम ने पारंपरिक भाषा की सीमाओं को विस्तृत करते हुए “मानवीय अभिव्यक्ति का एक नया आयाम” प्रस्तुत किया है (कृष्ण घोड़ेला, 2021, पैराग्राफ – 14)।

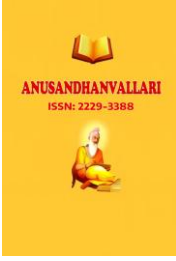


वही 'मीम संस्कृति' ने आधुनिक संवाद को सामाजिक व्याख्या का एक नवीन स्वरूप प्रदान किया है। ये केवल हास्य या मनोरंजन के साधन नहीं रहे। क्योंकि 'समाज की सामूहिक सोच', 'अनुभव' और 'दृष्टिकोण' को अभिव्यक्त करने वाले प्रभावशाली प्रतीक बन गए हैं (नव्यवेश नवराही 2017, पैराग्राफ – 14)। एक मीम किसी सामाजिक स्थिति, राजनीतिक घटना या व्यक्तिगत भावना को सरल और तीव्र रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे वह तुरंत व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँच जाता है। इस प्रक्रिया में भाषा की औपचारिकता कम होती है और संवाद अधिक सहज व जन सुलभ बन जाता है। मीम अब सामाजिक प्रतिक्रिया के साथ-साथ 'सांस्कृतिक टिप्पणी का माध्यम' भी बन चुके हैं (कुशल पाठशाला, 2023, पैराग्राफ – 12)। इस प्रवृत्ति को समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मीम का प्रयोग कितनी तीव्रता से बढ़ रहा है और यह लोगों के व्यवहार तथा विचार निर्माण को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है –

तालिका 01: सोशल मीडिया पर इमोजी और मीम के उपयोग का प्रतिशत सर्वेक्षण (2022-2023)		
सोशल मीडिया मंच	इमोजी उपयोग (%)	मीम साझा करने की आवृत्ति (%)
व्हाट्सएप	84%	57%
इंस्टाग्राम	72%	96%
फेसबुक	84%	72%
एक्स (ट्विटर)	78%	49%
टेलीग्राम	46%	37%

[स्रोत: कुशल पाठशाला, (2023)]

उपरोक्त आँकड़े यह संकेत देते हैं कि इमोजी का उपयोग लगभग सभी सोशल प्लेटफॉर्म पर अत्यधिक लोकप्रिय हो चुका है। इसके विपरीत, मीम का प्रयोग मुख्यतः 'इंस्टाग्राम' और 'फेसबुक' – जैसे दृश्य-प्रधान माध्यमों पर अधिक देखा गया है। यह अंतर स्पष्ट करता है कि



“इमोजी” संवाद में भावनाओं की त्वरित अभिव्यक्ति का साधन बन गए हैं, जबकि “मीम” सामाजिक प्रतिक्रिया और सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक के रूप में विकसित हुए हैं ((संजीव कुमार, 2023, पृष्ठ संख्या – 51)। इस आँकड़ा-विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि भाव-प्रेषण अब दृश्य प्रतीकों के माध्यम से अधिक प्रभावशाली और जीवंत रूप ले रहा है। परिणामस्वरूप, भाषा केवल संप्रेषण का उपकरण न रहकर अनुभवों के साझा प्रदर्शन का माध्यम बनती जा रही है (सीमा सिंह 2023, पृष्ठ संख्या – 289)। यही प्रवृत्ति आगे के बिंदु – “ट्रेडिंग शब्दावली का उद्भव और सामाजिक-भाषिक प्रभाव” में और स्पष्ट रूप से परिलक्षित होगी। जहाँ भाषा के व्यावहारिक रूपांतरण की दिशा का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा।

ट्रेडिंग शब्दावली का उद्भव और सामाजिक-भाषिक प्रभाव

डिजिटल युग ने संप्रेषण के साथ-साथ ‘आर्थिक व्यवहार की भाषा’ को भी नया आयाम प्रदान किया है। जब वित्तीय गतिविधियाँ ऑनलाइन माध्यमों पर स्थानांतरित हुईं, तब “ट्रेडिंग शब्दावली” ने समाज में एक विशिष्ट पहचान स्थापित की। यह अब अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बन गई है (शैलेश शुक्ला 2024, पैराग्राफ – 15)। ‘शेयर’, ‘क्रिप्टो’, ‘बुल रन’ और ‘मार्केट क्रैश’ – जैसे शब्द अब केवल आर्थिक संकेतक नहीं हैं; वे व्यक्ति के ‘आत्मविश्वास’, ‘आशा’ और ‘सामाजिक दृष्टिकोण’ के प्रतीक बन चुके हैं। इस परिवर्तन ने संप्रेषण को भावनात्मक तथा आर्थिक दोनों स्तरों पर गहराई प्रदान की है। विशेष रूप से युवा वर्ग में इन शब्दों का प्रयोग अपनी दैनिक बातचीत का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं (रीता सिंह, 2020, पैराग्राफ – 17)। इस प्रकार, भाषा अब मात्र सूचना का साधन न रहकर व्यक्ति की पहचान और दृष्टिकोण का प्रतिबिंब बन गई है।

यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि “ट्रेडिंग शब्दावली” ने संवाद को प्रतिस्पर्धात्मक और व्यावहारिक दोनों रूपों में परिवर्तित कर दिया है। अब ‘गिरावट’, ‘लॉस’ और ‘रिटर्न –’ जैसे शब्द जीवन की भावनात्मक अवस्थाओं के प्रतीक बन गए हैं। इस भाषिक प्रवृत्ति का विस्तार

वित्तीय चर्चाओं से आगे बढ़कर सामान्य वार्तालाप में भी दिखाई देता है (मंजु मुकुल 2017, पृष्ठ संख्या – 108)। जैसा कि ‘मुकुल मंजु’ ने लिखा है कि –

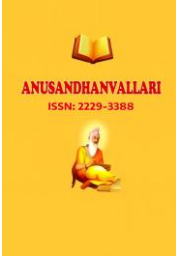
“भाषा तभी जीवंत रहती है

जब वह जीवन की गति और समाज के बदलते रूपों के साथ चलती है।”

(मुकुल मंजु (2017), पृष्ठ संख्या – 109)

यह विचार इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि ट्रेडिंग की भाषा अब समाज के बदलते आर्थिक और सांस्कृतिक अनुभवों का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। सोशल मीडिया संवादों में जब कोई कहता है – **“आज मार्केट ग्रीन है”** या **“लॉस हुआ पर सीख मिली”** – तो ये वाक्य केवल आर्थिक स्थिति का संकेत ही नहीं देते, साथ में व्यक्ति की जीवन-दृष्टि और मानसिक संतुलन को भी प्रकट करते हैं (अम्ब्रीश त्रिपाठी 2021, पैराग्राफ – 06)। इस परिवर्तन ने संवाद की शैली को अधिक **“यथार्थपरक”, “संवेदनशील”** और **“अनुभवाधारित”** बना दिया है।

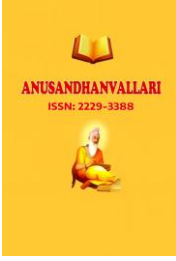
इस नई भाषिक संरचना का सामाजिक प्रभाव अत्यंत व्यापक और दूरगामी है। ट्रेडिंग शब्दावली ने लोगों के संवाद में **‘आर्थिक जागरूकता’** और **‘बौद्धिक सक्रियता’** को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया है (प्रियांका रंजन एवं उत्तम कुमार पेगू, 2023, पैराग्राफ – 19)। अब भाषा, व्यवहार और विचार के बीच एक नया सामंजस्य स्थापित हो रहा है। यह प्रवृत्ति संप्रेषण को अधिक तर्कसंगत और आत्मानुभव आधारित बना रही है। समाज में वे शब्द, जो पहले केवल आर्थिक संदर्भों में प्रयुक्त होते थे, अब सामाजिक संबंधों और मानवीय संवाद के निर्धारक बन गए हैं। यही कारण है कि ट्रेडिंग शब्दावली अब **“सांस्कृतिक भाषा”** का अंग बनकर एक नई **“प्रतीकात्मक संप्रेषण शैली”** को जन्म दे रही है (किशन रेगार, 2023, पैराग्राफ – 12)। आगामी विश्लेषण – **“सोशल मीडिया संवाद में नई प्रतीकात्मक भाषा”** में यह स्पष्ट किया जाएगा कि ये शब्द अब सामूहिक भावनाओं और पहचान के सशक्त प्रतीक बन चुके हैं।



सोशल मीडिया संवाद में नई प्रतीकात्मक भाषा

“डिजिटल संप्रेषण” के युग में सोशल मीडिया ने भाषा को एक नवीन प्रतीकात्मक रूप प्रदान किया है। अब भावनाएँ शब्दों से अधिक संकेतों और दृश्यों के माध्यम से अभिव्यक्त होने लगी हैं। व्यक्ति अपनी मानसिक स्थिति या विचार को किसी ‘इमोजी’, ‘हैशटैग’ या ‘मीम’ के ज़रिए तुरंत साझा कर सकता है। यह परिवर्तन आधुनिक समाज की उस प्रवृत्ति को दर्शाता है, जहाँ संवाद तर्क से अधिक अनुभव और संवेदना पर आधारित हो गया है (सीमा सिंह 2023, पृष्ठ संख्या – 287)। प्रत्येक प्लेटफॉर्म पर इस प्रतीकात्मक भाषा की अपनी विशिष्टता दिखाई देती है – “इंस्टाग्राम” पर दृश्य अभिव्यक्ति, “व्हाट्सएप” पर भाव-संकेतों का प्रयोग, और “एक्स (ट्विटर)” पर विचारात्मक हैशटैग का उपयोग प्रमुख है। यह प्रवृत्ति बताती है कि ‘भाषा’ अब सूचना का माध्यम होने के साथ-साथ साझा भावनात्मक अनुभवों को जोड़ने का माध्यम बन चुकी है (जागरण, 2023, पैराग्राफ – 19)। जो सांस्कृतिक विविधताओं के बीच एकता स्थापित करती है। इस प्रवृत्ति के विस्तार और सामाजिक प्रभाव को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से भी समझा जा सकता है, जो विभिन्न प्रतीकों के उपयोग की बढ़ती प्रवृत्ति को स्पष्ट करती है –

तालिका 02: प्रतीकात्मक भाषा के उपयोग में सामाजिक प्रवृत्तियाँ			
प्रतीक का प्रकार	उपयोग का प्रतिशत (%)	प्रमुख उद्देश्य	प्रमुख उपयोगकर्ता वर्ग
इमोजी	93%	भावनात्मक जुड़ाव	विद्यार्थी और युवा पेशेवर
मीम	79%	सामाजिक व्यंग्य और मनोरंजन	विद्यार्थी, डिजिटल कंटेंट क्रिएटर
हैशटैग	69%	विचार या अभियान की पहचान	युवा और सामाजिक कार्यकर्ता

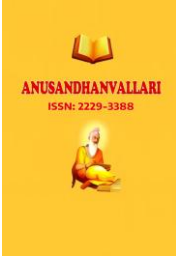


GIF	60%	भाव की त्वरित अभिव्यक्ति	सामान्य उपयोगकर्ता
स्टिकर	56%	अनौपचारिक संवाद	मित्र समूह और परिवार

[स्रोत: जागरण, (2023)]

यह तालिका स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि “इमोजी” और “मीम” आधुनिक संवाद के सबसे प्रभावशाली साधन बन गए हैं। ये न केवल भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं, साथ ही सामाजिक विचारों को भी समान रूप से प्रकट करते हैं। “हैशटैग” अब मात्र ट्रेडिंग प्रतीक न रहकर सामाजिक आंदोलनों और जनचेतना के संकेतक बन चुके हैं। आँकड़ों से यह भी ज्ञात होता है कि ‘युवा वर्ग’ इस प्रतीकात्मक भाषा का सबसे सक्रिय वाहक है। उसने संवाद को न केवल गति दी है, साथ में उसमें रचनात्मकता और आत्मीयता भी जोड़ी है। इस प्रवृत्ति ने संप्रेषण को अधिक जीवंत और सहभागी रूप प्रदान किया है। जिससे भाषा का सामाजिक प्रभाव और व्यापक हो गया है (नव्यवेश नवराही 2017, पैराग्राफ – 22)।

इस प्रवृत्ति का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि भाषा अब राष्ट्रीय या क्षेत्रीय सीमाओं में बँधी नहीं रही। एक ही इमोजी या मीम दुनिया के विभिन्न हिस्सों में समान भावनाएँ व्यक्त कर सकता है। इससे संवाद का स्वरूप “वैश्विक” और “मानवीय” दोनों बन गया है (मंजु मुकुल 2023, पृष्ठ संख्या – 156)। अब शब्दों के स्थान पर प्रतीक सामाजिक संबंधों और भावनात्मक जुड़ाव का माध्यम बन रहे हैं। इस परिवर्तन ने संप्रेषण को नए आयाम दिए हैं और पारंपरिक भाषिक सीमाओं को लांघते हुए एक “साझा सांस्कृतिक अनुभव का निर्माण” किया है (विजेन्द्र कुमार 2022, पृष्ठ संख्या – 167)। यह स्थिति संप्रेषण की दिशा में एक नया अध्याय खोल रही है, जिसका विस्तृत विश्लेषण आगे “आधुनिक संप्रेषण माध्यमों के लाभ, सीमाएँ और सामाजिक परिणाम” में प्रस्तुत किया जाएगा।

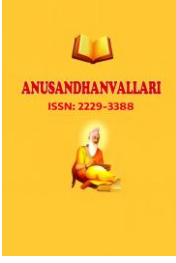


आधुनिक संप्रेषण माध्यमों के लाभ, सीमाएँ और सामाजिक परिणाम

आधुनिक संप्रेषण माध्यमों ने संवाद को 'गति', 'सरलता' और 'वैश्विक विस्तार' प्रदान किया है। व्यक्ति अब अपने विचारों और भावनाओं को क्षणभर में साझा कर सकता है। जिससे संवाद अधिक सुलभ और सहभागितापूर्ण बन गया है। "इमोजी", "मीम" और "त्वरित संदेश" ने संप्रेषण को जीवंत और आकर्षक रूप दिया है (अनिरुद्ध कुमार सुधांशु 2021, पृष्ठ संख्या – 138)। इन तकनीकी साधनों ने शिक्षा, व्यवसाय और समाज के क्षेत्रों में नई सक्रियता उत्पन्न की है। उन्होंने भाषा को केवल सूचना का माध्यम न रखकर "सामाजिक जुड़ाव का सेतु" बना दिया है (गुलाब कोठारी 2022, पृष्ठ संख्या – 221)। परिणामस्वरूप, संप्रेषण ने मानवीय संबंधों में आत्मीयता, सहयोग और पारस्परिक समझ को गहराई प्रदान की है।

संप्रेषण के सकारात्मक आयामों के साथ उसकी सीमाएँ भी स्पष्ट हैं। डिजिटल माध्यमों पर संवाद जितना तीव्र हुआ है, उतना ही वह सतही भी बनता जा रहा है। व्यक्ति अब 'प्रतीकों' और 'इमोजी' के माध्यम से अपनी बात व्यक्त करता है, जिससे भाषा की गहराई और भावनात्मक संवेदना घट रही है (प्रियांका रंजन एवं उत्तम कुमार पेगू, 2023, पैराग्राफ – 20)। 'सोशल मीडिया' पर संवाद कई बार विवाद या असहमति का रूप ले लेता है, जहाँ 'भावनात्मक नियंत्रण का अभाव' दिखाई देता है। यह प्रवृत्ति भाषा की गरिमा और संवाद संस्कृति के लिए चुनौती बन गई है। 'निरंतर ऑनलाइन उपस्थिति' व्यक्ति के मानसिक संतुलन को प्रभावित कर रही है (सरिता जोशी, 2024, स्लाइड – 25)। इसके परिणामस्वरूप 'थकान', 'प्रतिस्पर्धा' और 'सामाजिक अलगाव' की भावना बढ़ी है। इस प्रकार, आधुनिक संप्रेषण माध्यमों ने अभिव्यक्ति की नई संभावनाएँ तो खोली हैं, पर संवाद की आत्मीयता को सीमित किया है। तकनीकी सुविधा के साथ अब "भावनात्मक अनुशासन" और "मानवीय संवेदनशीलता" की आवश्यकता पहले से अधिक बढ़ गई है।

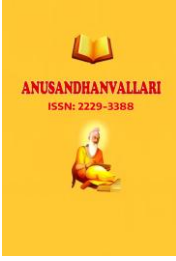
इन माध्यमों के सामाजिक परिणाम अत्यंत दूरगामी हैं। 'सोशल मीडिया' ने विचारों के प्रसार को लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान किया है। अब प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों को व्यापक समाज



तक पहुँचा सकता है। परंतु इस सुविधा के साथ 'सामाजिक धुवीकरण' और 'वैचारिक विभाजन' भी बढ़ा है। संवाद अब केवल सूचना साझा करने का माध्यम नहीं रहा। यह पहचान, प्रदर्शन और प्रतिस्पर्धा का मंच बन गया है (विजेन्द्र कुमार 2022, पृष्ठ संख्या – 189)। युवा वर्ग इस प्रक्रिया में सबसे सक्रिय रूप से सम्मिलित है। उसके लिए संप्रेषण 'आत्म-अभिव्यक्ति' और 'सामाजिक पहचान' का सशक्त माध्यम बन गया है। इस प्रवृत्ति के प्रभाव से भाषा अधिक लचीली और प्रतीक प्रधान बन गई है। उसमें अनेक स्तरों पर अर्थ और संकेत विकसित हुए हैं। समाज में व्यवहार, दृष्टिकोण और सोच की नई दिशा उभरकर सामने आई है। यह समग्र परिवर्तन संप्रेषण को केवल तकनीकी प्रक्रिया न बनाकर 'सामाजिक-संस्कृतिक घटना' के रूप में स्थापित करता है (मंजु मुकुल 2017, पृष्ठ संख्या – 178)।

निष्कर्ष और सुझाव

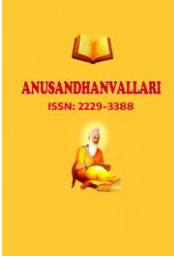
इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल युग में "संप्रेषण के स्वरूप" ने मनुष्य की अभिव्यक्ति, सोच और व्यवहार के आयामों को गहराई से परिवर्तित किया है। अब शब्दों के स्थान पर "प्रतीक", "इमोजी" और "मीम" संवाद के केंद्र में आ गए हैं। इन माध्यमों से भावनाएँ दृश्य संकेतों के रूप में त्वरित ढंग से अभिव्यक्त होती हैं। यह प्रवृत्ति संप्रेषण को अधिक 'सहज', 'आकर्षक' और 'सार्वभौमिक' बनाती है। साथ ही, इसके भीतर भावनात्मक गहराई और भाषिक सूक्ष्मता का संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो गया है। डिजिटल मंचों पर प्रयोग में आने वाली ट्रेडिंग शब्दावली ने भाषा को अर्थ-विस्तार प्रदान किया है। इससे सामाजिक संवाद में 'आर्थिक' और 'व्यावसायिक चेतना' का समावेश हुआ है। समग्र रूप से यह अध्ययन इस निष्कर्ष तक पहुँचता है कि आधुनिक संप्रेषण केवल सूचना के आदान-प्रदान का साधन नहीं रहा। वह अब "संस्कृति", "पहचान" और "सामूहिक अनुभव" का एक गतिशील माध्यम बन चुका है। इसने भाषा को भावनात्मक और तकनीकी – दोनों स्तरों पर नई ऊर्जा और जीवंतता प्रदान की है।



आधुनिक संप्रेषण की इस नई दिशा में यह आवश्यक है कि भाषा की आत्मीयता और संवेदनशीलता को संरक्षित रखा जाए। डिजिटल माध्यमों पर संवाद करते समय उपयोगकर्ता को यह समझना चाहिए कि 'इमोजी' और 'मीम' केवल भावों के पूरक हैं। वे मानवीय अनुभूति के पूर्ण विकल्प नहीं बन सकते। संवाद में भावनात्मक सजीवता बनाए रखने के लिए भाषा का सावधानीपूर्वक और सटीक प्रयोग आवश्यक है। "शिक्षण संस्थानों" में डिजिटल साक्षरता के साथ भाषाई संवेदनशीलता का विकास भी समान रूप से महत्वपूर्ण होना चाहिए। इससे 'युवा वर्ग' तकनीक का प्रयोग अभिव्यक्ति के विस्तार के रूप में कर सकेगा, न कि भावनाओं के प्रतिस्थापन के रूप में। साथ ही, शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं को इन उभरती प्रवृत्तियों के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का निरंतर अध्ययन करना चाहिए। ऐसा करने से संवाद का यह नया युग 'मानवीय मूल्यों', 'सह-अनुभूति' और 'रचनात्मकता' के साथ संतुलित रूप से आगे बढ़ सकेगा।

संदर्भ सूची :-

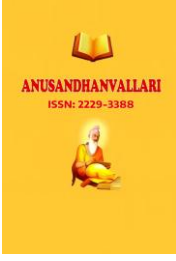
1. मंजु मुकुल. (2023). "मीडिया में अनुवाद का संप्रेषण धर्मी नवीन मॉडल". Hans Prakashan, Delhi, India. ISBN: 9789394277441.
2. विजेन्द्र कुमार. (2022). "संप्रेषण प्रक्रिया तथा जन संचार". Khushi Publications, Delhi, India. ISBN: 9789381133392.
3. गुलाब कोठारी. (2022). "संप्रेषण की समग्रता". Indra Publishing House, Bhopal, India. ISBN: 9789390700943.
4. विजेन्द्र कुमार. (2022). "प्रभावी संप्रेषण तथा आधुनिक तकनीकी". Khushi Publications, Delhi, India. ISBN: 9789381133408.
5. अनिरुद्ध कुमार, सुधांशु एवं सुशील कुमार बघेल. (2021). "संप्रेषण कला". Academic Publication, New Delhi, India. ISBN: 9789391798499.
6. मंजु मुकुल. (2017). "संप्रेषण : चिंतन और दक्षता". Shivalik Prakashan, New Delhi.



7. रवींद्र जाधव एवं केशव मोरे. (2016) "हिन्दी और मीडिया: बदलती प्रवृत्ति". Delhi: Vani Prakashan.

■ लिंक आधारित स्रोत :-

1. शैलेश शुक्ला. (2024, फ़रवरी 27). "डिजिटल युग में नैगम संचार की उभरती प्रवृत्तियाँ: चुनौतियाँ एवं अवसर". *New Media Mein Hindi Sahitya Blog*.
<https://hindisahitya.blogspot.com>
2. सरिता जोशी. (2024, जनवरी). "हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी". *भारत मौसम विभाग*.
<https://imdpune.gov.in>
3. सीमा सिंह. (2023). "सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव: निजता, पहचान, और डिजिटल विभाजन के पहलुओं का विश्लेषण". *Journal of Research in Humanities and Social Science*, 11(2), 287-295. Quest Journals. ISSN (Online): 2321-9467.
<https://www.questjournals.org>
4. किशन रेगार. (2023). "सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी". *KKR Education*.
<https://www.kkreducation.com>
5. कुशल पाठशाला. (2023, October 10). "सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी: अर्थ, स्वरूप, आवश्यकता एवं इसके महत्व". *Kushal Pathshala*.
<https://kushalpathshala.com>
6. प्रियांका रंजन एवं उत्तम कुमार पेगू. (2023, सितंबर 30). "डिजिटल संचार तकनीक की संभावनाएं और पत्रकारीय चुनौतियां". *अपनी माटी*.
<https://www.apnimaati.com>
7. जागरण. (2023, अप्रैल). "सोशल मीडिया और हिंदी". *दैनिक जागरण*.
<https://share.google>
8. संजीव कुमार. (2023, अप्रैल 04). "डिजिटल युग का हिंदी साहित्य पर प्रभाव". शिक्षण संशोधन: *जर्नल ऑफ आर्ट्स, ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़*, 6(4), 49-52.



<https://shikshansanshodhan.researchculturesociety.org>

9. कृष्ण घोड़ेला. (2021, नवंबर 24). "इमोजी क्या है - अर्थ, उपयोग". *GK Hub*.

<https://www.gkhub.in>

10. अम्ब्रीश त्रिपाठी. (2021, जून 24). "हिंदी का नया वितान: सोशल मीडिया". *HindiTech: A Blind Double Peer Reviewed Bilingual Web-Research Journal*, Bhasha-Manthan Charitable Trust.

<https://hinditech.in>

11. रीता सिंह. (2020, सितंबर 18). "डिजिटल दुष्प्रचार और संचार में मानवीय आवाज़ की भूमिका: शोध". *ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन*.

<https://www.orfonline.org>

12. नव्यवेश नवराही. (2017, अक्टूबर 6). "सोशल मीडिया साहित्य के प्रसार में अच्छी भूमिका निभा रहा है". *पत्रिका*.

<https://www.patrika.com>